रविवार 22 नवंबर, 2020

*विषय — **आत्मा और शरीर***

स्वर्ण पाठ: **रोमियो** 13 : 1

"हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे।"

उत्तरदायी अध्ययन: **इफिसियों 4 : 1-7**

1 सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके
योग्य चाल चलो।
2 अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।
3 और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।
4 एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।
5 एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।
6 और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपरऔर सब के मध्य में, और सब में है।
7 पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. **1 कुरिन्थियों 3 : 16**

16 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?

2. **व्यवस्थाविवरण 27 : 1**

1 फिर इस्राएल के वृद्ध लोगों समेत मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी, कि जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सब को मानना।

3. व्यवस्थाविवरण 28 : 1-4, 8, 9

1 यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूं, चौकसी से पूरी करने का चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ट करेगा।
2 फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आर्शीवाद तुझ पर पूरे होंगे।
3 धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में।
4 धन्य हो तेरी सन्तान, और तेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़-बकरी आदि पशुओं के बच्चे।
8 तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशीष देगा; इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में वह तुझे आशीष देगा।
9 यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उसके मार्गों पर चले, तो वह अपनी शपथ के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेगा।

4. रोमियो 12 : 1, 2

1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

5. यूहन्ना 3 : 1-15

1 फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
2 उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की आरे से गुरू हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।
3 यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
4 नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दुसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?

5 यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे
तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
7 अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से
आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।
9 नीकुदेमुस ने उस को उत्तर दिया; कि ये बातें क्योंकर हो सकती हैं?
10 यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्त्राएलियों का गुरू हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?
11 मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उस की गवाही
देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।
12 जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं,
तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे?
13 और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।
14 और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र
भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए।
15 ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए॥

6. मरकुस 8 : 34-37

34 उस ने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उन से कहा, जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने
आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।
35 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये
अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।
36 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?
37 और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?

7. 1 कुरिन्थियों 6 : 19 (जानते), 20

19 … क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें
परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥

8. कुलुस्सियों 3 : 1, 2, 15-17

1 कुरिन्थियोंसोजब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह
वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।
2 पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।
15 और मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे,
और तुम धन्यवादी बने रहो।
16 मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ,
और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और
आत्मिक गीत गाओ।
17 और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता
का धन्यवाद करो॥

9. 1 थिस्सलुनीकियों 5 : 16-23

16 सदा आनन्दित रहो।
17 निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो।
18 हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।
19 आत्मा को न बुझाओ।
20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।
21 सब बातों को परखो: जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।
22 सब प्रकार की बुराई से बचे रहो॥
23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे
प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 477 : 22-24, 26 *केवल*

आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी किसी भी चीज को हीन नहीं कर सकती

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है।

2. 310 : 14 (विज्ञान)-17

विज्ञान आत्मा को ईश्वर के रूप में प्रकट करता है, पाप और मृत्यु से अछूता, — केंद्रीय जीवन और बुद्धिमत्ता के रूप में जिसके चारों ओर मन की प्रणालियों में सामंजस्यपूर्ण रूप से सभी चीजें हैं।

3. 71 : 5-9

सभी वास्तविकता की पहचान या विचार हमेशा के लिए जारी है; लेकिन आत्मा, या सभी का दिव्य सिद्धांत, आत्मा के निर्माण में नहीं है। जीवात्मा आत्मा, ईश्वर का पर्याय है, परिमित रूप से बाहर का रचनात्मक, शासी, अनंत सिद्धांत, जो केवल प्रतिबिंबित होता है।

4. 301 : 5-23, 30-9

कुछ व्यक्ति यह दर्शाते हैं कि क्राइस्टियन साइंस का अर्थ प्रतिबिंब से क्या है। स्वयं के लिए, नश्वर और भौतिक व्यक्ति पदार्थ प्रतीत होता है, लेकिन पदार्थ की उसकी भावना में त्रुटि शामिल है और इसलिए सामग्री, लौकिक है।

दूसरी ओर, अमर, आध्यात्मिक व्यक्ति वास्तव में पर्याप्त है, और शाश्वत पदार्थ, या आत्मा को दर्शाता है, जो मनुष्यों के लिए आशा है। वह परमात्मा को दर्शाता है, जो एकमात्र वास्तविक और शाश्वत इकाई है। यह प्रतिबिंब नश्वर अर्थ को पारलौकिक लगता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य की पर्याप्तता नश्वर दृष्टि को पार कर जाती है और यह केवल दिव्य विज्ञान के माध्यम से प्रकट होती है।

जैसा कि ईश्वर पदार्थ है और मनुष्य ईश्वरीय छवि और समानता है, मनुष्य को आत्मा के पदार्थ की इच्छा करनी चाहिए, केवल पदार्थ की, न कि पदार्थ की और वास्तव में उसने ऐसा किया है। यह विश्वास कि मनुष्य के पास कोई अन्य पदार्थ या मन है, आध्यात्मिक नहीं है और पहले आज्ञा को तोड़ता है, आप एक ईश्वर को, एक मन को स्वीकार करेंगे।

यह मिथ्यात्व आत्मा को भौतिक रूपों में एक असंदिग्ध निवासी होने के लिए प्रेरित करता है, और मनुष्य आध्यात्मिक के बजाय भौतिक होने के लिए। अमरता मृत्यु से बंधी नहीं है। आत्मा परिमितता से प्रभावित नहीं होती है। सिद्धांत खंडित विचारों में नहीं पाया जाना है।

भौतिक शरीर और मन लौकिक हैं, लेकिन वास्तविक मनुष्य आध्यात्मिक और शाश्वत है। असली आदमी की पहचान नहीं खोई है, लेकिन इस स्पष्टीकरण के माध्यम से पाया जाता है।; इसके लिए अस्तित्व और सभी पहचान के प्रति सचेत अविभाजित है और अपरिवर्तित रहता है। जब भगवान सब और अनंत काल के हैं, तब यह असंभव है कि मनुष्य को वास्तविक रूप से खोना चाहिए।

5. 467 : 17-23

विज्ञान आत्मा, अंतर आत्मा को प्रकट करता है, जैसा कि शरीर में नहीं है, और भगवान मनुष्य में नहीं, बल्कि मनुष्य द्वारा परिलक्षित होता है। इससे कम में अधिक नहीं हो सकता। विश्वास है कि कम में अधिक हो सकता है एक त्रुटि है कि विफल हो जाता है। यह आत्मा विज्ञान में एक प्रमुख बिंदु है, कि सिद्धांत इसके विचार में नहीं है। आत्मा, अंतर आत्मा, मनुष्य में सीमित नहीं है, और कभी भी भौतिक नहीं है।

6. 466 : 19-31

देवता शब्द के रूप में प्राण या तांडव अनुचित है। प्राण या आत्मा देवता को दर्शाता है और कुछ नहीं। न कोई परिमित प्राण है और न ही आत्मा। प्राण या आत्मा का अर्थ केवल एक मन है, और इसका बहुवचन में प्रतिपादन नहीं किया जा सकता है। हीथ पौराणिक कथाओं और यहूदी धर्मशास्त्रों ने इस धारणा को समाप्त कर दिया है कि बुद्धि, प्राण और जीवन सामग्री में हो सकते हैं; और मूर्तिपूजा और कर्मकांड सभी मानव निर्मित विश्वासों का परिणाम है। क्रिस्चियनिटी का विज्ञान हाथ से पंखे के साथ गेहूं को अलग करने के लिए आता है। विज्ञान ईश्वर को अष्ट घोषित करेगा, और ईसाई धर्म इस घोषणा और उसके ईश्वरीय सिद्धांत को प्रदर्शित करेगा, जिससे मानव जाति शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से बेहतर होगी।

7. 122 : 24-10

भौतिक अर्थों में, गले की नस का जीवन दूर हो जाता है; लेकिन आध्यात्मिक अर्थों में और विज्ञान में, जीवन अपरिवर्तित है और शाश्वत है। लौकिक जीवन अस्तित्व का झूठा भाव है।

हमारे सिद्धांत आत्मा और शरीर के बारे में वही गलती करते हैं जो टॉलेमी ने सौर मंडल के बारे में की थी। वे जोर देकर कहते हैं कि आत्मा शरीर और मन में है इसलिए सामग्री के लिए सहायक है। खगोलीय विज्ञान ने खगोलीय पिंडों के संबंधों के रूप में झूठे सिद्धांत को नष्ट कर दिया है, और क्रिश्चियन साइंस निश्चित रूप से हमारे स्थलीय निकायों के रूप में अधिक से अधिक त्रुटि को नष्ट कर देगा। तब मनुष्य का वास्तविक विचार और सिद्धांत प्रकट होगा। टॉलेमिक विस्फोट आत्मा और शरीर से संबंधित त्रुटि के रूप में होने के सामंजस्य को प्रभावित नहीं कर सका, जो विज्ञान के आदेश को उलट देता है और आत्मा की शक्ति और विशेषाधिकार को भौतिक करने के लिए असाइन करता है, जिससे कि मनुष्य सबसे कमजोर और धार्मिक प्राणी बन जाता है ब्रम्हांड।

8. 119 : 25-6

सूर्योदय को देखने में, कोई पाता है कि यह इंद्रियों के सामने सबूतों का खंडन करता है कि यह विश्वास है कि पृथ्वी गति में है और सूर्य आराम के लिए है। चूंकि खगोल विज्ञान सौर प्रणाली के आंदोलन की मानवीय धारणा को उलट देता है, इसलिए ईसाई विज्ञान आत्मा और शरीर के प्रतीत होने वाले संबंध को उलट देता है और शरीर को मन की सहायक बनाता है। इस प्रकार यह मनुष्य के साथ है, जो संयमशील मन का विनम्र सेवक है, हालांकि यह समझदारी को अन्यथा प्रकट करता है। लेकिन हम इसे कभी नहीं समझेंगे जबकि हम स्वीकार करते हैं कि आत्मा शरीर या मन में है, और वह आदमी गैर-बुद्धि में शामिल है। आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

9. 114 : 23-29

क्रिश्चियन साइंस मानसिक के रूप में सभी कारणों और प्रभाव को बताता है, शारीरिक नहीं। यह आत्मा और शरीर से रहस्य का पर्दा उठाता है। यह भगवान के लिए मनुष्य के वैज्ञानिक संबंध को दर्शाता है, जा रहा है की अंतरनिहित अस्पष्टताओं को हटा देता है, और कैद किए गए विचारों को मुक्त करता है। दिव्य विज्ञान में, मनुष्य सहित ब्रह्मांड, आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है।

10. 210 : 11-16

यह जानकर कि आत्मा और उसकी विशेषताओं को हमेशा मनुष्य के माध्यम से प्रकट किया गया था, मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, अंधे को दृष्टि दी, बधिर को सुना, पैरों को लंगड़ा किया, इस प्रकार दिव्य की वैज्ञानिक कार्रवाई को प्रकाश में लाया मानव मन और शरीर पर मन और आत्मा और मोक्ष की बेहतर समझ देना।

11. 200: 8-15 (*से 2nd.*)

जो कोई भी प्राण की व्याख्या करने के लिए अक्षम है वह शरीर की व्याख्या नहीं करेगा। जीवन है, था, और हमेशा सामग्री से स्वतंत्र रहेगा; क्योंकि जीवन ईश्वर है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है, भौतिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से, और वह क्षय और धूल के अधीन नहीं है। भजनहार ने कहा: "तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।"

12. 273 : 16-18

सामग्री और चिकित्सा विज्ञान के तथाकथित कानूनों ने नश्वर को कभी भी पूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और अमर नहीं बनाया है। आत्मा द्वारा शासित होने पर मनुष्य सामंजस्यपूर्ण होता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6